वर्ष 15 अंक 4
शिशिर 2025

करुणा-मित्र

ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी – भारत की पत्रिका
प्राणी अधिकारों के लिए अंतर्राष्ट्रीय शैक्षणिक धर्मार्थ ट्रस्ट

ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी
एक ऐसी जीवनपद्धति है
जो किसी जीव को, चाहे वो
भूमि, जल अथवा वायु का हो
भय, पीड़ा अथवा मृत्यु नहीं पहुँचाती

संपादकीय

पतंगबाजी

दशकों से, बीडब्ल्यूसी उत्तरायण और मकर संक्रांति जैसे त्योहारों पर पतंग उड़ाने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले मांजे के खिलाफ अभियान चला रहा है, जिसके परिणामस्वरूप अक्सर पक्षियों, जानवरों और मनुष्यों को गंभीर चोटें पहुँचती है और यहाँ तक कि मौत भी हो जाती है।

जुलाई 2017 में, राष्ट्रीय हरित अधिकरण (NGT) ने पतंग उड़ाने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले मांजे पर देशव्यापी प्रतिबंध लगा दिया था। सभी राज्यों को 'कांच से लेपित नायलॉन, कपास और चीनी मांजे के निर्माण, बिक्री, भंडारण, खरीद और उपयोग' पर प्रतिबंध लगाने का निर्देश दिया गया था।

दुर्भाग्य से, राज्य सरकारों और पुलिस ने सख्त कार्रवाई नहीं की, जबकि NGT के प्रतिबंध का उल्लंघन पशु क्रूरता निवारण अधिनियम, 1960 और पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, 1986 के तहत एक अपराध है, जिसके लिए 5 साल तक की कैद और 1 लाख रुपये का जुर्माना या दोनों हो सकते हैं।

कानून को दरकिनार करने के लिए, पतंग के लिए 3-डोरी, 4-डोरी, 6-डोरी और 12-डोरी वाले डोर बेचे गए। इन आंकड़ों से पता चलता है कि सूती डोर को कितनी बार धारदार बनाया गया था।

चोटग्रस्त होने वाले पक्षियों में ब्राह्मणी चील, काली चील, घरेलू कौवे, जंगली कौवे, गुलाबी छल्ले वाले तोते, कबूतर, बगुला, रात्रि बगुला (night heron) उल्लू, साथ ही चमगादड़, गाय और कुत्ते भी शामिल थे। शिशुओं, बच्चों, किशोरों, युवक-युवतियों और वरिष्ठ नागरिकों को भी नहीं बख्शा गया। इस साल भी दुपहिया वाहन-सवार कई लोग मांजे से जानलेवा रूप से चोटग्रस्त होते रहे।

पुलिस ने निर्माताओं या विक्रेताओं के खिलाफ कोई सख्त कार्रवाई नहीं की है। जहाँ तक खरीदारों और उपयोगकर्ताओं की बात है, उन्हें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता- जब तक कि उनका कोई परिचित गंभीर रूप से प्रभावित न हो।

2020 में जब उच्च न्यायालय की औरंगाबाद पीठ ने जानलेवा मांजे पर टाइम्स ऑफ इंडिया की रिपोर्ट को स्वतः संज्ञान वाली जनहित याचिका में बदल दिया, तो उम्मीद जगी। इसके तुरंत बाद,

औरंगाबाद स्थित बॉम्बे उच्च न्यायालय की पीठ ने स्थानीय पुलिस के साइबर सेल को मांजे की ऑनलाइन बिक्री पर रोक लगाने के लिए उठाए गए कदमों को रिकॉर्ड में दर्ज करने का निर्देश दिया।

आखिरकार, दिसंबर 2024 में, छत्रपति संभाजीनगर (औरंगाबाद) पुलिस ने भारतीय न्याय संहिता की धारा 110 के तहत मांजे के विक्रेताओं और खरीदारों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की, जिसमें ''गैर इरादतन हत्या का प्रयास'' शामिल है और जिसके परिणामस्वरूप 3 साल की कैद या जुर्माना, या दोनों हो सकते हैं। इसके अलावा, अगर इससे किसी व्यक्ति को चोट पहुँचती है, तो कारावास की अवधि 7 साल तक बढ़ सकती है, या जुर्माना, या दोनों हो सकते हैं; और यह सत्र न्यायालय में गैर-जमानती अपराध है।

कानून हमारे पक्ष में है, बस इसे पूरी तरह से मांजे से मुक्त करने के लिए लागू नहीं किया गया है। अभिभावकों और शिक्षकों को बच्चों में भी यह जागरूकता फैलाने की आवश्यकता है।

क्या आप जानते हैं कि वडोदरा के पास लूणा नामक एक गाँव है, जहाँ 2021 से शायद ही कोई पतंग उड़ाता है (और अगर उड़ाता भी है तो दोपहर के समय) क्योंकि वे सर्दियों में आने वाले 300 से अधिक पेंटेड स्टॉर्क पक्षियों को नुकसान नहीं पहुँचाना चाहते।

जब आप यह पढ़ रहे होंगे, पतंग उड़ाने का मौसम शुरू होने वाला होगा, इसलिए अगर आपको पतंग उड़ानी ही है, तो कृपया सिर्फ़ अनुमति प्राप्त सूती डोरी का ही इस्तेमाल करने का संकल्प लें, जो सफ़ेद और मुलायम हो, रंगीन या सख़्त न हो, और जिस पर कोई लेप न लगा हो।

भरत कापडीआ
संपर्क: editorkm@bwcindia.org

इस पंजाबी घोड़े के सफेद कोट के नीचे छिपा है एक जानलेवा राज़

नुकरा घोड़ा किसी सपने जैसा लगता है, लेकिन इस चमक के नीचे एक खामोश त्रासदी छिपी है, कहती हैं निर्मल निश्चित

मारवाड़ी घोड़े का एक सफ़ेद संस्करण, नुकरा, पंजाब में अपनी सुंदरता एवं प्रतिष्ठा के लिए बहुमूल्य माना जाता है। हालाँकि, बेदाग़ बालों के लिए प्रजनन के कारण गंभीर अंतःप्रजनन हुआ है, जिससे त्वचा-कैंसर और कमज़ोर प्रतिरक्षा जैसी स्वास्थ्य समस्याएँ पैदा हो रही हैं। पशु चिकित्सक नुकरा की पीड़ा पर चिंता जता रहे हैं और दिखावे को महत्त्व देने के बजाय पशु की भलाई को प्राथमिकता देने का आग्रह कर रहे हैं।

पंजाब का विख्यात बेदाग़ सफ़ेद घोड़ा, नुकरा, एक जानवर से कहीं बढ़कर है। अपने दूधिया सफ़ेद बालों के साथ, यह गतिमान कविता है; इसे गाथागीतों, शादियों और युद्धघोषों में पिरोया गया है– यह गर्व, शक्ति और ईश्वरीय कृपा का प्रतीक है। लेकिन दुलारे नुकरा के चमकते बालों के पीछे गलत जगह रखे गए घमंड की एक दिल दहला देने वाली कहानी छिपी है।

पहली नज़र में, नुकरा किसी सपने जैसा लगता है। क्रीम-गुलाबी त्वचा, जो धूप में चमकती है। गहरी और गहरी आँखें। एक ऐसी चाल, जो विस्मय पैदा करती है। बेदाग़ होने के लिए पाले गए, ये अब सोशल मीडिया फ़ीड्स, शादी के जुलूसों और गाँव के मेलों में दौड़ते हैं, इनकी उपस्थिति ही धन और प्रतिष्ठा का संचार करती है। लेकिन इस चमक के नीचे एक खामोश त्रासदी छिपी है।

"ये घोड़े कष्ट सह रहे हैं, लेकिन लोग इतने चकाचौंध में हैं कि उन्हें देख ही नहीं पाते।" लुधियाना स्थित गुरु अंगद देव पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (GADVASU) में सर्जरी प्रमुख डॉ. अरुण आनंद आह भरते हुए कहते हैं। "हम जो देख रहे हैं, वह सुंदरता का अपने ही विरुद्ध का रूप है।"

नुकरा घोड़े के राजसी ठाठ। ***तसवीर सौजन्य:*** **pathbeat.in**

नुकरा कोई अलग नस्ल नहीं हैं – ये देशी मारवाड़ी घोड़े के एल्बिनो रूप हैं। इनकी प्रसिद्धि में वृद्धि हाल ही में हुई है: लगभग 50 साल पहले, एक दुर्लभ बिना रंग का घोड़ा पैदा हुआ था। तब से, बढ़ती माँग को देखते हुए प्रजनकों ने बाकी सब चीज़ों को नज़रअंदाज़ करते हुए बेदाग़ सफ़ेद बालों का चयन शुरू कर दिया। इस एकनिष्ठ ध्यान के कारण गंभीर अंतःप्रजनन, कमज़ोर प्रतिरक्षा प्रणाली और जीवन-घातक स्थितियों के प्रति संवेदनशीलता में वृद्धि हुई है। GADVASU में, लाए गए सभी बीमार घोड़ों में से 30% तक नुकरा- नस्ल के होते हैं।

आनंद इन मुद्दों पर विस्तार से बताते हैं: "त्वचा कैंसर। आँखों के ट्यूमर। जननांग कैंसर। चार साल से कम उम्र के घोड़ों में सारकॉइड्स। यह दिल तोड़ने वाला है।" मूल कारण? मेलेनिन की कमी, वह प्राकृतिक रंगद्रव्य, जो त्वचा को सूरज से पहुँचने वाली हानि से बचाता है। इसके बिना, ये घोड़े उसी धूप में असहाय हैं, जिसके नीचे चमकने के लिए इन्हें पाला गया था।

पटियाला के ब्रीडर और इक्विन फ़ोटोग्राफ़र मनु शर्मा कहते हैं, "अब लोग फ़ोटो के लिए 'परफ़ेक्ट' घोड़ा चाहते हैं।"

COMPASSIONATE FRIEND
करुणा-मित्र
ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी
सिद्धोमल चैरिटेबल ट्रस्ट
के प्रति उनके द्वारा उदारतापूर्वक प्रदान किये गये
₹ 1,50,000/- के लिये कृतज्ञ है।

"आप इन शानदार नुकरा घोड़ों को ऑनलाइन देखते हैं, लेकिन कोई भी इस बारे में बात नहीं करता कि वे किस दौर से गुज़र रहे हैं।" शर्मा, जिन्होंने कभी खुद नुकरा नस्ल के घोड़े पाले थे, कहते हैं कि दिल्ली और मुंबई के कुलीन परिवारों द्वारा शादियों के लिए इन्हें किराए पर लेना शुरू करने के बाद इनकी माँग में भारी वृद्धि हुई।

पंजाब, हरियाणा और राजस्थान के पशु चिकित्सकों ने खतरे की घंटी बजा दी है। लेकिन बाज़ार मज़बूत बना हुआ है – कुछ नुकरा अपनी गिरती सेहत के बावजूद कई लाख रुपये में बिकते हैं। आनंद कहते हैं, "अभी बहुत देर नहीं हुई है। लेकिन हमें घोड़ों को उनके रंग से बढ़कर प्यार करना होगा। हमें जानवर की रक्षा करनी होगी, उसके विचार की नहीं।" तब तक, नुकरा अपनी सवारी जारी रखेगा– नाज़ुक और प्रशंसित– एक ऐसी दुनिया में जो सिर्फ़ चमक देखती है, दाग नहीं।

आमतौर पर शादियों में इस्तेमाल की जाने वाली शुद्ध सफेद घोड़ियाँ अंधी मानी जाती हैं। इन्हें दयनीय स्थिति में रखा जाता है और अक्सर दूल्हे के घर तक कई किलोमीटर पैदल चलना पड़ता है। वहाँ घोड़े को साज-सज्जा से ढका जाता है और उसकी पीठ पर एक भारी सिंहासन-काठी रखी जाती है, जिस पर दूल्हा और एक अन्य व्यक्ति बैठते हैं। आसपास का शोरगुल वाला बैंड और शोरगुल करने वाले लोग घोड़े के लिए बेहद तनावपूर्ण होते हैं। इसलिए उसे लगाम से कसकर पकड़कर धीरे-धीरे दुल्हन के घर तक ले जाना पड़ता है। दरअसल, घोड़े के मुँह में लोहे की ज़ंजीर ठूँसकर उसके मसूड़ों से खून निकाला जा सकता है और पटाखे एवं लालटेन जलाकर उसे डराया जा सकता है।

ऐसे शुद्ध सफेद घोड़ों को नुकरा के नाम से जाना जाता है, लेकिन नुकरा किसी नस्ल का नाम नहीं है। ये मारवाड़ी घोड़ों का एक एल्बिनो प्रकार है, जिन्हें 50 से ज़्यादा सालों से विशेष रूप से पाला जा रहा है। इसके कारण गंभीर अंतर्प्रजनन हुआ है, उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली कमज़ोर हुई है और चार साल से कम उम्र के घोड़ों में त्वचा/जननांग कैंसर, आँखों के ट्यूमर और सारकॉइड्स (फेफड़ों, लिम्फ नोड्स और अन्य अंगों में ग्रैनुलोमा बनने वाला एक सूजन संबंधी रोग) जैसी जानलेवा बीमारियों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ गई है। इस गंभीर और लगातार पीड़ा का कारण मेलेनिन की कमी है, जो त्वचा को सूरज की क्षति से बचाने वाला एक प्राकृतिक रंगद्रव्य है, जिससे वे धूप में असहाय हो जाते हैं। बीडब्ल्यूसी का मानना है कि अगर शादी के जुलूसों और अन्य समारोहों में इन सफ़ेद घोड़ों की माँग नहीं होती, तो इन्हें विशेष रूप से नहीं पाला जाता।

यातायात की भीड़ और शोरगुल में नुकरा घोड़े को डर लगना सहज है।
तसवीर सौजन्य: mid-day.com

जनवरी 2015 में, गाजियाबाद में, दूल्हे को उसके विवाह समारोह में ले जा रहा एक घोड़ा एक खंभे से लटके बिजली के तार से करंट लगने से लगभग तुरंत मर गया।

घोड़े का मालिक घोड़े को आगे-आगे चला रहा था। दूल्हे ने तुरंत छलांग लगा दी और खुद को बचा लिया।

अप्रैल 2015 में, पायल नाम की एक घोड़ी को मुंबई में एक बारात में दूल्हे को ले जाने के लिए बुक किया गया था, लेकिन वहाँ ले जाते समय वह एक कचरा गाड़ी के हॉर्न से डर गई। उसने अपने जॉकी-केयरटेकर को गिरा दिया, जिससे उसका पैर टूट गया और वह असहाय होकर भागता हुआ देखता रहा... वह टोल नाके में घुस गई और बांद्रा वर्ली सी लिंक की लगभग पूरी लंबाई तक कारों के साथ-साथ दौड़ती रही... जिससे वहाँ मुस्कान, अफरा-तफरी और कारों की गति धीमी हो गई।

आखिरकार, घोड़ों को संभालना जानने वाले कुछ इज़राइली पर्यटक अपनी टैक्सी से उतरे और उसे काबू में कर लिया। तब पता चला कि कुछ महिने पहले मालिक ने चार साल की घोड़ी को एक लाख रुपये की कीमत और 25,000 रुपये के अग्रिम भुगतान पर, सोलापुर के एक ग्रामीण मेले से खरीदा था। उसने बताया कि वह नाच सकती है, टीवी धारावाहिक 'महाराणा प्रताप' में अभिनय भी कर चूकी है और अखबारों के विज्ञापनों में भी दिखाई दे चुकी है।

जानवरों के आसपास कभी भी पटाखे नहीं फोड़े जाने चाहिए या तेज़ आवाज़ें उत्पन्न नहीं की जानी चाहिए, क्योंकि इससे मनुष्यों और जानवरों दोनों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इससे भी बेहतर यह है कि किसी भी जानवर को जुलूस में शामिल न किया जाए। जुलूसों में जानवरों द्वारा खींचे जाने वाले रथ या सजे-धजे जानवर शामिल नहीं होने चाहिए और न ही उन्हें मौज-मस्ती करने वालों के साथ लंबी दूरी तक चलने के लिए मजबूर किया जाना चाहिए।

सौभाग्य से, ऐसे दूल्हों की संख्या बढ़ रही है, जो घोड़ों के प्रति दया और सहानुभूति के कारण घोड़ों की सवारी करना छोड़ रहे हैं। दूसरे शब्दों में: "सिर्फ़ बारात, कोई घोड़ी नहीं"।

जैन वीगन व्यंजन

इस स्तंभ के अंतर्गत जैन वीगन व्यंजन बनाने की विधि प्रस्तुत है। यदि आप भी कोई रेसिपी भेजना चाहते हैं, तो पत्र/ई-मेल के द्वारा भेजें। वीगन से हमारा तात्पर्य यह है कि शाकाहारी लोगों की ऐसी श्रेणी, जोकि खाने-पीने में प्राणिज पदार्थ से बनी किसी भी वस्तु के प्रयोग से दूर रहते हैं। निम्नदर्शित व्यंजन आपकी प्रतिरक्षा (इम्यूनिटी) सिस्टम को न केवल बढ़ावा देती है, आरोग्यप्रद और स्वादिष्ट भी है।

मोरिंगा

सहजन/मोरिंगा/सेनजाना/मुरुंगई की फली, फूल और पत्तियाँ कैरोटीन, कैल्शियम, फासफ़ोरस और विटामिन सी के स्रोत हैं। सहजन के पौधे के जीवाणुरोधी गुण संक्रमण से लड़ सकते हैं। तेजी से बढ़ने वाले उष्णकटिबंधीय सहजन के पेड़ को सहजन के पेड़ के रूप में जाना जाता है, क्योंकि इसकी फली का उपयोग ग्रामीण संगीतकारों द्वारा ड्रमस्टिक के रूप में किया जाता है। एशियाई सब्जी अनुसंधान और विकास केंद्र की वेबसाइट बताती है, औंस के हिसाब से, सहजन की पत्तियों में गाजर की तुलना में अधिक बीटा-कैरोटीन, मटर की तुलना में अधिक प्रोटीन, संतरे की तुलना में अधिक विटामिन सी, दूध की तुलना में अधिक कैल्शियम, केले की तुलना में अधिक पोटेशियम और पालक की तुलना में अधिक आयरन (लौह तत्त्व) होता है।

जर्नल ऑफ हर्बल मेडिसिन एंड टॉक्सिकोलॉजी के द्वारा 2010 में किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि मोरिंगा के पत्तों के नियमित सेवन से कुल रक्त कोलेस्ट्रॉल का स्तर और एलडीएल कम हो गया और एचडीएल बढ़ गया। दुनियाभर के देशी चिकित्सक इससे प्राप्त दवाओं से ऑस्टियोपोरोसिस, गठिया, मधुमेह और मानसिक रुग्णता सहित 300 बीमारियों का इलाज करते हैं। इसलिए यह बिल्कुल आश्चर्यजनक नहीं था कि मोरिंगा 2015 के लिए सेलिब्रिटी सुपर फूड्स में शामिल था। 2017 में अंतर्राष्ट्रीय मोरिंगा जर्मप्लाज़म संग्रह में 500 से अधिक पेड़ थे, जो मोरिंगा जीनस की 12 या 13 प्रजातियों का प्रतिनिधित्व करते थे। प्रसिद्ध नवजीवन अस्पताल के अस्थि रोग विशेषज्ञों के अनुसार, नियमित रूप से सहजन का सेवन करने से सभी आयु वर्ग के लोगों को जोड़ों के दर्द और अस्थि विषयक कमियों या कमजोरियों से राहत मिल सकती है।

मोरिंगा सूप (सहजन का सूप)

सामग्री

3 सहजन की फली छीलकर 2 इंच लंबे टुकड़ों में कटी हुई
1 छोटा चम्मच तेल
1 तेज पत्ता
1 कप लौकी, कटी हुई
2 छोटे चम्मच अजमोद के डंठल कटे हुए
नमक स्वाद अनुसार
2 कप पानी
6 काजू, साबुत
1 छोटा चम्मच काली मिर्च, कुटी हुई
ताज़ा हरा धनिया, सजाने के लिए कटा हुआ

बनाने की विधि

सहजन की फलियों को धोकर अलग रख दें।
प्रेशर कुकर में तेल गर्म करें। तेजपत्ता और लौकी डालें। 2 मिनट तक भूनें।
सहजन की फलियाँ, अजमोद के डंठल, नमक और पानी डालकर अच्छी तरह मिलाएँ।
कुकर का ढक्कन बंद करके मध्यम आँच पर 10 मिनट तक पकाएँ।
उबले हुए मिश्रण में काजू डालें और ठंडा होने के लिए अलग रख दें।
मिश्रण को हैंड ब्लेंडर से पीसकर मुलायम गाढ़ा गूदा बनायें।
एक खाली कटोरी में प्यूरी(गूदे) को छलनी से छान लें।
सूप को फिर से गरम करें और काली मिर्च डालकर अच्छी तरह मिलाएँ।
ऊपर से ताज़ा हरा धनिया डालकर गरमागरम परोसें।

बी डब्ल्यू सी द्वारा जांचे-परखे व आस्वाद किये गए स्वादिष्ट व्यंजनों की विधि का संकलन देखने के लिए कृपया www.bwcindia.org/Web/Recipes/Recipesindex.html की मुलाकात लें।

प्रकाशक: डायना रत्नागर,
अध्यक्षा, ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी - भारत
सम्पादक: भरत कापडीआ
डिझाईन: दिनेश दाभोळकर
मुद्रण स्थल: 181 शुक्रवार पेठ, पुणे 411 002

करुणा-मित्र
का प्रकाशनाधिकार
ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी के पास सुरक्षित है।
प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना
किसी भी प्रकार से किसी भी मुद्रित सामग्री
की अनधिकृत प्रतिकृति करना प्रतिबंधित है।

करुणा-मित्र प्राणिज पदार्थ-रहित कागज़
पर मुद्रित किया जाता है,
और प्रत्येक
बसंत (फरवरी), ग्रीष्म (मई),
वर्षा (अगस्त) एवं शिशिर (नवम्बर)
में प्रकाशित किया जाता है।

ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी - भारत
4 प्रिन्स ऑफ वेल्स ड्राइव, वानवडी, पुणे 411 040
+91 74101 26541 admin@bwcindia.org bwcindia.org

Scan me

केवल निजी प्रचलन हेतु Reg. No. 022203/30/86/AL/TC